

# ॥ वैश्वदेवमन्त्राः ॥

(तैत्तिरीयारण्यकम्/प्रपाठकः - १०/अनुवाकः - ६७)

अ॒ग्नये॒ स्वाहा॑॥ वि॒श्वेभ्यो॑ दे॒वेभ्यः॑ स्वाहा॑॥ ध्रु॒वाय॑ भू॒माय॑ स्वाहा॑॥  
ध्रु॒वक्षि॑तये॒ स्वाहा॑॥ अ॒च्युत॑क्षि॒तये॒ स्वाहा॑॥ अ॒ग्नये॑ स्विष्ट॒कृते॑  
स्वाहा॑॥ ध॒र्माय॑ स्वाहा॑॥ अध॑र्माय॒ स्वाहा॑॥ अ॒द्भ्यः स्वाहा॑॥  
ओष॑धि॒वन्स्प॑तिभ्यः॒ स्वाहा॑॥१॥

र॒क्षोदे॑व॒जने॑भ्यः॒ स्वाहा॑॥ गृ॒ह्याभ्यः॑ स्वाहा॑॥ अ॒वसाने॑भ्यः॒ स्वाहा॑॥  
अ॒वसान॑प॒तिभ्यः॑ स्वाहा॑॥ स॒र्वभू॑तेभ्यः॒ स्वाहा॑॥ का॒माय॑ स्वाहा॑॥  
अ॒न्तरि॑क्षाय॒ स्वाहा॑॥ यदे॒जति॑ ज॒गति॑ यच्च॒ चेष्ट॑ति॒ नाम्नो॑ भा॒गोऽयं॑  
नाम्ने॑ स्वाहा॑॥ पृथि॒व्यै स्वाहा॑॥ अ॒न्तरि॑क्षाय॒ स्वाहा॑॥२॥

दि॒वे स्वाहा॑॥ सू॒र्याय॑ स्वाहा॑॥ च॒न्द्रम॑से॒ स्वाहा॑॥ नक्ष॑त्रेभ्यः॒ स्वाहा॑॥  
इन्द्रा॑य॒ स्वाहा॑॥ बृ॒हस्प॑तये॒ स्वाहा॑॥ प्र॒जाप॑तये॒ स्वाहा॑॥ ब्र॒ह्मणे॑  
स्वाहा॑॥ स्व॒धा पि॑तृभ्यः॒ स्वाहा॑॥ नमो॑ रु॒द्राय॑ पशु॒पत॑ये॒ स्वाहा॑॥३॥

दे॒वेभ्यः॑ स्वाहा॑॥ पि॑तृभ्यः॒ स्व॒धाऽस्तु॑॥ भू॒तेभ्यो॑ नमः॑॥ म॒नुष्ये॑भ्यो  
हन्ता॑॥ प्र॒जाप॑तये॒ स्वाहा॑॥ पर॑मे॒ष्ठिने॑ स्वाहा॑॥ यथा॑ कूपः॒ शत॑धा॒रः  
स॒हस्र॑धा॒रो अक्षि॑तः॥ ए॒वा मे॑ अस्तु॒ धान्य॑ꣳ स॒हस्र॑धा॒रमक्षि॑तम्॥  
धन॑धान्यै॒ स्वाहा॑॥ ये भू॒ताः प्र॑चर॒न्ति दि॒वान्तं॑ ब॒लिमि॑च्छ॒न्तो  
वि॒तुद॑स्य॒ प्रेष्याः॑॥ तेभ्यो॑ ब॒लिं पु॑ष्टि॒कामो॑ ह॒रामि॑ मयि॒ पुष्टि॑  
पुष्टि॑पतिर्दधातु॒ स्वाहा॑॥४॥

॥ ॐ शान्तिः॒ शान्तिः॒ शान्तिः॑ ॥

---

 generated on **February 28, 2025**

Downloaded from

 <http://stotrasamhita.github.io> |  StotraSamhita | [Credits](#)